खंड-1; अंक 1
दिनांक : 30 अप्रैल 2023

जन विज्ञान समाचार

AIPSN न्यूज़लेटर

सलाहकार बोर्ड

सत्यजीत रथ डी. रघुनंदन सब्यसाची चटर्जी
प्रज्वल शास्त्री टी. गंगाधरन सत्यजीत चक्रवर्ती
कोमल श्रीवास्तव पी. राजमनिक्कम् प्रमोद गौरी

संपादक

इंद्रनील

संपादकीय टीम

एस. कृष्णास्वामी बिप्लब घोष ऋचा चिंतन
कविता कबीर अरुण रवि आशा मिश्र

डिज़ाइन

अरुण रवि

AIPSN न्यूज़लेटर
खंड-1; अंक 1
दिनांक : 30 अप्रैल 2023

20
23
मई

जन विज्ञान समाचार

जन विज्ञान AIPSN की एक समाचार पत्रिका है।
AIPSN पूरे भारत में फैले चालीस से अधिक
विज्ञान संगठनों का एक समूह/नेटवर्क है।

विषयसूची

04	न्यूज़लेटर के बारे में
05	AIPSN नरेंद्र दाभोलकर स्मृति पुरस्कार से सम्मानित
06	नेशनल एक्शन : 17 वीं अखिल भारतीय जन विज्ञान कांग्रेस
08	इतिहास के पन्नों से : AIPSN के 30 साल - कन्नूर से भुवनेश्वर तक
11	आत्मनिर्भरता पर संगोष्ठी
12	राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यशाला
12	पीपल्स रिलीफ़ कमेटी (जन राहत समिति) के साथ स्वास्थ्य अधिकार कार्यशाला
14	एक नए केरल के लिए विज्ञान - जन अभियान
17	समता के तीस वर्ष
18	'जेनेटिक्स फ़ॉर पीपल' पर कार्यशाला
19	डार्विन दिवस
19	कृषि कार्यशाला
21	AIPSN स्थापना दिवस समारोह
22	पश्चिम बंगाल में विज्ञान अविजान - 2023
24	मध्य प्रदेश में नवनिर्वाचित पंचायती राज संस्थानों के सदस्यों से संवाद
25	मध्य प्रदेश में स्वास्थ्य देखभाल के अधिकार पर बैठक और संगोष्ठी
27	मौजूदा कार्यकारिणी के सदस्य
28	सदस्य संगठन
पीछे का कवर	

AIPSNPEOPLESCIENCE@GMAIL.COM

न्यूज़लेटर के बारे में

HTTPS://AIPSN.NET

अखिल भारतीय जन विज्ञान नेटवर्क पूरे देश में फैले चालीस से अधिक जन विज्ञान संगठनों का एक नेटवर्क है। AIPSN ने विज्ञान को लोकप्रिय बनाने में शामिल संगठनों के एक नेटवर्क के रूप में औपचारिक रूप से वर्ष 1988 में अपनी यात्रा शुरू की। हालांकि, 1987 से ही भारत जन विज्ञान जत्था जो कि नेशनल काउंसिल फ़ॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी कम्युनिकेशन (NCSTC) द्वारा समर्थित था, के दौरान काम शुरू हो गया था। तब से AIPSN ने विज्ञान संचार और लोकप्रियकरण से संबंधित गतिविधियों में अग्रणी भूमिका निभाई है।

अपनी यात्रा और कई अभियानों के दौरान AIPSN विविध संचार रणनीतियों का उपयोग करता है, जैसे - कला जत्था, स्लाइड शो, वीडियो फ़िल्म, सार्वजनिक बैठक, नुक्कड़ नाटक आदि। गठन के पैंतीस साल बाद, आज AIPSN देश के आधे से अधिक ज़िलों और तकरीबन हर राज्य में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका में मौजूद है।

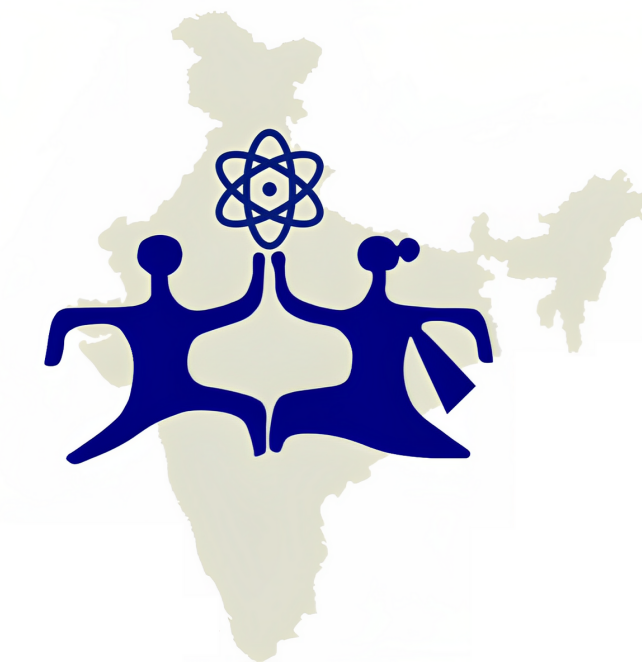

जून 6-9, 2022 के दौरान आयोजित 17 वीं ऑल इंडिया पीपल्स साइंस कांग्रेस (AIPSC) के दौरान AIPSN ने एक आवधिक समाचार पत्र लाने का संकल्प लिया, जो AIPSN के काम को दर्ज करे और महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर AIPSN की आलोचनात्मक टिप्पणियों और मांगों को व्यक्त करने के लिए एक और मंच प्रदान करे। हमें खुशी है कि 30 अप्रैल 2023 को दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा सभा के अवसर पर, AIPSN ने एक बार फिर से समाचार पत्र " पीपल्स साइंस" या " जन विज्ञान" की शुरुआत की है। इस संवाद पत्र को, जो कि पहले 1998 से 2000 तक छापा गया था, दोबारा शुरू करने की यह एक छोटी-सी कोशिश है।

कृपया अपनी प्रतिक्रिया, सुझाव, टिप्पणी और योगदान के साथ हमें यहां लिखें : aipsnpeoplescience@gmail.com

वैज्ञानिक रूप से आपकी,
संपादकीय टीम

AIPSN नरेंद्र दाभोलकर स्मृति पुरस्कार से सम्मानित

AIPSN को महाराष्ट्र फ़ाउंडेशन द्वारा नरेंद्र दाभोलकर मेमोरियल अवार्ड मिला। महाराष्ट्र फ़ाउंडेशन संयुक्त राज्य अमेरिका से महाराष्ट्र के शुभचिंतकों द्वारा स्थापित एक संस्था है। डॉ. दाभोलकर महाराष्ट्र फ़ाउंडेशन के काम से निकटता से जुड़े थे और महाराष्ट्र में उनके वार्षिक कार्यक्रम आयोजित करते थे।

डॉ. नरेंद्र दाभोलकर की हत्या के बाद, महाराष्ट्र फ़ाउंडेशन ने डॉ. नरेंद्र दाभोलकर की स्मृति में एक पुरस्कार शुरू किया था। यह इस पुरस्कार का नौवां वर्ष है। पिछले तीन सालों से उन्होंने तय किया कि इस पुरस्कार के लिए महाराष्ट्र के बाहर के संगठनों और लोगों को भी शामिल किया जाए।

इस साल उनकी चयन समिति ने पुरस्कार के लिए AIPSN के नाम पर विचार किया। 28 जनवरी 2023 को पुणे में एक बड़े समारोह में यह पुरस्कार प्रदान किया गया। चयन समिति ने समाज में तर्कवाद फैलाने के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए AIPSN को इस पुरस्कार के लिए चुना।

नेशनल एक्शन :
17 वीं अखिल भारतीय जन विज्ञान कांग्रेस

17 वीं अखिल भारतीय जन विज्ञान कांग्रेस का आयोजन भोपाल, मध्य प्रदेश में 06-09 जून 2022 तक किया गया था। कांग्रेस का आयोजन एक असाधारण पृष्ठभूमि में किया गया। कांग्रेस का आयोजन 2020 में होना था पर COVID-19 महामारी की वजह इसे दो साल मुल्तवी करना पड़ा।

भोपाल में 17 वीं कांग्रेस के आयोजन में मध्य प्रदेश भारत ज्ञान-विज्ञान समिति, मध्य प्रदेश विज्ञान सभा और एकलव्य जैसे संगठनों ने अखिल भारतीय जन विज्ञान नेटवर्क (AIPSN) के राष्ट्रीय सचिवालय के साथ एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कांग्रेस में चर्चा का केंद्रीय विषय था " **भारत की संकल्पना** " इस कांग्रेस के आयोजन में, AIPSN ने ज़ोर देकर कहा कि "भविष्य का भारत , विशेष रूप से युवाओं का आह्वान करता है। अपनी संभावनाओं को प्राप्त करने के लिए, भारत को अपने स्वतंत्रता आंदोलन के मूल्यों और आकांक्षाओं को समकालीन संदर्भ में फिर से उजागर और परिकल्पित करना होगा और आगे बढ़ने की प्रक्रिया में अपनी गलतियों, विफलताओं और चूके हुए अवसरों से सीखना होगा। कोई भी देश प्रगति नहीं कर सकता अगर उसके लोग एक दूसरे के खिलाफ़ विभाजित हों। क्या आज़ादी के 75 साल बाद भी हम खुद को फिर से बंटने दे सकते हैं?"

कांग्रेस की शुरुआत एक अनोखे तरीके से हुई - इसकी शुरुआत भारतीय संविधान की प्रस्तावना के पठन के साथ हुई। कांग्रेस का आयोजन एक्सटोल कॉलेज में किया गया और परिसर का नामकरण AIPSN के जुझारू कार्यकर्ता डॉ. अमित सेनगुप्ता के नाम पर किया गया।

AIPSC का उद्घाटन, केरल में COVID-19 संकट के दौरान एक सक्षम नेतृत्व प्रदान करने वाली, पूर्व स्वास्थ्य मंत्री के. के. शैलजा द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता प्रसिद्ध पत्रकार और लेखक पी. साईनाथ थे। इस सत्र के अन्य वक्ताओं में AIPSN के अध्यक्ष डॉ.सब्यसाची चटर्जी, AIPSN के साथी रामप्रकाश, प्रख्यात वैज्ञानिक इंदुमति डी. तथा लेखक और कवि राजेश जोशी शामिल थे।

चार दिवसीय कांग्रेस में भारत के 25 राज्यों के लगभग 700 वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इन चार दिनों में AIPSC ने कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों, जैसे - वैज्ञानिक मनोवृत्ति; शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020; स्वास्थ्य; आत्मनिर्भरता; लिंग और सामाजिक न्याय; पर्यावरण; जलवायु परिवर्तन; आजीविका; सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों के निजीकरण; और सांस्कृतिक विविधता पर 9 उप-सत्र और 22 कार्यशालाओं का आयोजन किया।

इन कार्यशालाओं में कई ज़मीनी कार्यकर्ताओं, वैज्ञानिकों और अन्य विषय विशेषज्ञों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और अपने अनुभव साझा किए। कार्यशालाओं में सामुदायिक शिक्षण केंद्र और डिजिटल शिक्षा; प्रारंभिक बचपन की देखभाल; विज्ञान का संचार और गैर-वैज्ञानिक सोच का पर्दाफ़ाश; दवा नीति और दवा मूल्य-निर्धारण; डिजिटल स्वास्थ्य मिशन; मातृ, किशोर और बाल स्वास्थ्य; रोज़गार देने वाली दीर्घकालिक औद्योगिक नीति; ग्रामीण और शहरी आजीविका; लैंगिक सशक्तीकरण और सामाजिक न्याय; टिकाऊ कृषि; पर्यावरण संरक्षण; और जलवायु परिवर्तन जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई।

चार दिवसीय चर्चा और विचार-विमर्श के उपरांत समापन दिवस पर अखिल भारतीय जन विज्ञान कांग्रेस ने सर्वसम्मति से नस्लीय शुद्धता के अध्ययन की परियोजनाओं के खिलाफ़ एक प्रस्ताव पारित किया।

समापन समारोह के दौरान अतिथियों के साथ नई कार्यकारिणी के सदस्य

इतिहास के पन्नों से :

AIPSN के 30 साल - कन्नूर से भुवनेश्वर तक

टी. गंगाधरन

इसे भुवनेश्वर में 16वीं AIPSC के महासचिव की रिपोर्ट के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

अखिल भारतीय जन विज्ञान नेटवर्क (AIPSN) का गठन 12 फ़रवरी 1988 को कन्नूर , केरल में पहली अखिल भारतीय जन विज्ञान कांग्रेस (AIPSC) में किया गया था। इस पहली कांग्रेस का आयोजन केरल शास्त्र साहित्य परिषद् (KSSP) के रजत जयंती सम्मेलन के साथ किया गया। इस कार्यक्रम के तहत 11 और 12 फ़रवरी 1988 को सफ़ायर होटल के सभागार में, देश के विभिन्न हिस्सों से 26 संगठनों के लगभग 90 प्रतिनिधि एकत्रित हुए। इस पहली AIPSC का कोई औपचारिक उद्घाटन नहीं हुआ था क्योंकि यह स्थापना सम्मेलन था। इस पहली ऐतिहासिक कांग्रेस की औपचारिक शुरुआत प्रोफ़ेसर उदगांवकर के भाषण के साथ हुई , जिन्होंने इस बैठक की अध्यक्षता की और वे AIPSN के पहले अध्यक्ष बने।

पृष्ठभूमि

भले ही AIPSN की स्थापना 1988 में हुई थी, लेकिन आधारभूत काम लगभग एक दशक पहले शुरू हो चुका था। यह अभिलेखित है कि भारत में पहला विज्ञान संगठन, बंगीय विज्ञान परिषद्, प्रो सत्येंद्र नाथ बोस द्वारा 1948 में कोलकाता में शुरू किया गया था। तत्पश्चात् 1953 में असम साइंस सोसाइटी और 1960 में उड़ीसा विज्ञान परिषद् की स्थापना हुई । उसके बाद 1962 में केरल शास्त्र साहित्य परिषद् (KSSP) की और 1967 में मुंबई में BARC परिसर में फ़ेडरेशन ऑफ़ इंडियन लैंग्वेज साइंस एसोसिएशन (FILSA) की स्थापना हुई।

1972 के बाद से, KSSP द्वारा विभिन्न संस्थानों, विशेषकर महानगरों, में कार्यरत वैज्ञानिकों से संपर्क करने का प्रयास किया गया। FILSA के नेताओं ने वैज्ञानिकों के छोटे समूहों के साथ चर्चा करने के लिए विभिन्न राज्यों का दौरा किया। परिणामस्वरूप, वैज्ञानिकों की पहली अनौपचारिक बैठक 1973 में बैंग्लौर में आयोजित की गई। 10-12 नवंबर 1978 के दौरान KSSP ने तिरुवनंतपुरम में जन विज्ञान आंदोलनों के अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस तीन दिवसीय सम्मेलन में लगभग 20 समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले 100 से अधिक वैज्ञानिकों ने भाग लिया। औपचारिक और गैर-औपचारिक शिक्षा, जन स्वास्थ्य आंदोलनों, वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी और KSSP के नारे – "सामाजिक क्रांति के लिए विज्ञान" जैसे कई विषयों पर चर्चा हुई । पांच साल बाद, 1983 में, तिरुवनंतपुरम में दूसरा अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस समय तक, कर्नाटक राज्य विज्ञान परिषद् (KRVP) और दिल्ली साइंस फ़ोरम की स्थापना क्रमशः1976 और 1979 में हो चुकी थी।

1984 की भोपाल गैस त्रासदी ने दुनिया भर में और विशेष रूप से भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के दुरुपयोग पर चर्चा करने का माहौल बनाया। इस बारे में कई चिंतित वैज्ञानिक अपनी प्रतिक्रिया देना चाहते थे और इसके लिए वे विभिन्न राज्यों में विभिन्न विज्ञान संगठनों की तरफ़ आकर्षित हुए। NCSTC द्वारा समर्थित भारत जन विज्ञान जत्था 1987 (BJVJ), एक युगान्तरकारी कला जत्थे के तौर पर उभरा और वैज्ञानिकों के सभी सक्रिय समूहों को आयोजकों के रूप में लाने का एक माध्यम बन गया। भोपाल में पाँच कला जत्थों के समागम ने बहुत उत्साह पैदा किया और इसके परिणामस्वरूप पहली अखिल भारतीय जन विज्ञान कांग्रेस (AIPSC) का आयोजन हुआ और AIPSN की स्थापना हुई। BJVJ से पहले, KSSP ने 1983 में तमिलनाडु में एक राज्य स्तर का कला जत्था आयोजित किया और 1985 में बैंग्लौर से नई दिल्ली तक एक राष्ट्रीय कला जत्था आयोजित किया गया जिससे इन राज्यों में वैज्ञानिकों और कार्यकर्ता समूहों को BJVJ के आयोजकों के रूप में तैयार करने में मदद मिली।

AIPSN की परिकल्पना एक ऐसे नेटवर्क के रूप में की गई जिसमें पर्याप्त लचीलापन हो, जो सदस्य संगठनों को अपनी राज्य स्तर की गतिविधियों को जारी रखने की स्वतंत्रता प्रदान करे और साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त रूप से संयोजित कार्यक्रम भी चल सके ताकि एक राष्ट्रीय सूत्र को बनाए रखा जा सके। AIPSC अनुभव साझा करने के साथ-साथ विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर नीतियों के सैद्धांतिक पहलुओं पर चर्चा करने और वैज्ञानिक सार्वभौमीकरण के लिए, AIPSN के सदस्य संगठनों का सबसे महत्त्वपूर्ण मंच बन गया। 1990 तक, हर साल AIPSC आयोजित की जाती रही और दिलचस्प बात यह है कि 1990 में दो AIPSC आयोजित हुई – एक , मार्च में बेंगलुरु में और दूसरी दिसंबर में मुंबई में, जो किसी कारणवश समय से पहले करनी पड़ी थी । मुंबई AIPSC के बाद, इसे हर दो साल में आयोजित करने का निर्णय लिया गया। कुछ मौकों पर, अंतराल को तीन साल तक भी बढ़ा दिया गया।

एआईपीएससी	कार्यक्रम की जगह	साल और तारीख
पहली	कन्नानोर (कन्नूर)), केरल	1988 फरवरी 11-12
दूसरी	कोलकाता, पश्चिम बंगाल	1989 मार्च 15-18
तीसरी	बैंगलोर (बेंगलुरु), कर्नाटक	1990 मार्च 08-11
चौथी	मुंबई, महाराष्ट्र	1990 दिसंबर 25-28
पाँचवी	हिसार , हरियाणा	1992 मार्च 07-11
छठी	हैदराबाद, आंध्र प्रदेश	1994 मार्च 22-25
सातवीं	भोपाल, मध्य प्रदेश	1996 फरवरी 15-18
आठवीं	नालंदा , बिहार	1998 नवंबर 09-13
नौवीं	चेन्नई , तमिलनाडु।	2001 दिसंबर 18-21
दसवीं	शिमला, हिमाचल प्रदेश	2003 अक्टूबर 10 -14
ग्यारहवीं	गुवाहाटी, असम	2006 फरवरी 02-05
बारहवीं	रांची, झारखंड	2008 दिसंबर 20-23
तहरवीं	त्रिशूर, केरल	2010 दिसंबर 27-31
चौदहवीं	लखनऊ, उत्तर प्रदेश	2013 फरवरी 25-28
पंद्रहवीं	बेंगलुरु, कर्नाटक	2015 मई 21-25
सोलहवीं	भुवनेश्वर, ओडिशा	2018 फरवरी 08-12

तालिका 1 : विभिन्न जनविज्ञान कांग्रेस : जगह और तारीख

AIPSN विभिन्न राष्ट्रीय समन्वित कार्यक्रमों के माध्यम से विकसित हुआ। अर्णाकुलम मॉडल की सफलता के बाद **संपूर्ण साक्षरता अभियान** AIPSN द्वारा शुरू किया गया पहला बड़ा कार्यक्रम था। भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (BGVS), जो वर्तमान AIPSN का एक अभिन्न अंग है, की स्थापना राष्ट्रीय साक्षरता मिशन द्वारा समर्थित साक्षरता कार्यक्रम चलाने के लिए 1990 में की गई। 1990 के BJVJ और 1992 के BJVJ-2 ने साक्षरता अभियान के लिए एक मज़बूत मंच प्रदान करने के लिए गांवों तक आंदोलन की पहुंच का विस्तार किया। 1993 के समता कला जत्थे ने फिर से इस पहुंच में विस्तार किया।

1993-94 में 'हमारा देश' कार्यक्रम AIPSN की तरफ़ से NEP आने के बाद के दौर की एक ज़बरदस्त प्रतिक्रिया थी। विभिन्न विकास क्षेत्रों पर एक दर्जन से अधिक प्रामाणिक पुस्तिकाएं तैयार की गई और हज़ारों प्रतियां वितरित की गई, जिससे पूरे देश में बुद्धिजीवियों के साथ-साथ कार्यकर्ता भी प्रभावित हुए।

1996-97 के **'देश को जानो देश को बदलो'** (डीजेडीबी) अभियान ने कई गांवों में स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों के आंकलन के आधार पर स्थानीय विकास के लिए योजना शुरू की। केरल के विकेंद्रीकृत योजना के अनुभव के आधार पर, डीजेडीबी अभियान ने कई राज्यों में पंचायती राज संस्थाओं और विकेंद्रीकरण में हस्तक्षेप की दिशा में एक अच्छा उन्मुखीकरण किया। 1998 की नालंदा AIPSC में इसका परिचय मिला। नालंदा कांग्रेस में विभिन्न राज्यों के लगभग 40 पंचायत अध्यक्षों और नगरपालिका अध्यक्षों ने, जिसमें केरल से आए 14 व्यक्ति शामिल थे, अपनी स्थानीय सरकारों के स्थानीय विकास के अनुभवों को प्रस्तुत किया।

2014-15 में AIPSN ने मिलियन डायलॉग प्रोग्राम (MDP) तैयार किया। इसके तहत एक दर्जन पुस्तिकाएं तैयार की गई, सॉफ़्ट कॉपियां बांटी गई, राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय प्रशिक्षण आयोजित किए गए और संवाद शुरू किए गए। लेकिन राज्य स्तर की तैयारियों में कमियों के कारण एमडीपी पर्याप्त प्रभाव नहीं डाल सका।

2016-17 में AIPSN ने 'सबका देश , हमारा देश' (एसडीएचडी) नामक एक व्यापक कार्यक्रम तैयार किया। इसके तहत, अंग्रेज़ी में 10 पुस्तिकाएं तैयार की गई, जिनमें से कुछ का हिंदी में और कुछ का स्थानीय भाषाओं में अनुवाद किया गया। एसडीएचडी में पहले के संवाद अभियानों की तुलना में सांस्कृतिक मोर्चा अधिक महत्त्वपूर्ण था। यह अब भी चल रहा है। भोपाल में जन उत्सव नाम से आयोजित राष्ट्रीय सांस्कृतिक सभा AIPSN का नवीनतम हस्तक्षेप है जो भारत में चल रहे अंधकारमय युग के खिलाफ़ लड़ने के लिए रुचि और आत्मविश्वास पैदा करने में सफल हुआ है।

पिछले तीन दशकों के दौरान, AIPSN ने बड़े पैमाने पर, संरचनात्मक रूप से और साथ ही कार्यक्रमों में विकास किया है। डेस्क स्तर की गतिविधियों में वृद्धि हुई है। क्षेत्रीय नेटवर्क मज़बूत हुआ है। सदस्य संगठनों की संख्या 26 से बढ़कर 40 हो गई है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के उपयोग से संचार में सुधार हुआ है। 1998-2000 के दौरान, AIPSN ने एक समाचार पत्र प्रकाशित किया था जिसे आर्थिक दबावों की वजह से जारी नहीं रखा जा सका।

आज, AIPSN के 30वें वर्ष की 12 फ़रवरी को (गठन सम्मेलन भी 12 फ़रवरी को ही आयोजित किया गया था) , चुनौतियां कई हैं। जिस राष्ट्र ने अपने संविधान में वैज्ञानिक सोच के प्रचार-प्रसार को प्रत्येक नागरिक के उत्तरदायित्व के रूप में शामिल किया था , वही राष्ट्र आज अनेक अवैज्ञानिक मान्यताओं के प्रचार-प्रसार में सहायक बनता दिखाई देता है। हमारे देश में धर्मनिरपेक्षता खतरे में है। शिक्षा अधिक से अधिक सांप्रदायिक होती जा रही है। इससे संघर्ष का कोई सरल उपाय नहीं है। वैज्ञानिक सोच को समाज का स्वभाव बनना चाहिए। इस दिशा में AIPSN के सामने एक लंबा रास्ता है।

आत्मनिर्भरता पर संगोष्ठी

12-13 नवंबर 2022 को दिल्ली में विज्ञान और प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता पर AIPSN के साथ साझेदारी में दिल्ली साइंस फ़ोरम द्वारा एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। वैज्ञानिक प्रवृत्ति और विज्ञान की लोकप्रियता को बढ़ावा देने के साथ-साथ विज्ञान और तकनीकी (एस एंड टी) में आत्मनिर्भरता AIPSN का मुख्य कार्यक्षेत्र है। आत्मनिर्भरता भारत की संकल्पना का एक अभिन्न अंग है, जैसा कि भारतीय स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ के लिए AIPSN की सभी सामग्रियों में ज़ोर दिया गया है।

संगोष्ठी विभिन्न तकनीकी और तकनीकी-आर्थिक क्षेत्रों के प्रमुख विशेषज्ञों को एक साथ लाई। संगोष्ठी ने विज्ञान और तकनीकी आत्मनिर्भरता की दो अवधारणाओं में फ़र्क पर चर्चा की – एक वर्तमान सरकार की ' आत्मनिर्भरता ' , जो वास्तव में नव-उदारवाद और क्रोनी पूंजीवाद में निहित है, और दूसरी वास्तविक विज्ञान और तकनीकी में आत्मनिर्भरता , जिसका अर्थ स्वायत्त, स्वदेशी एसएंडटी क्षमता है और जो अन्य देशों या बाहरी एजेंसियों पर निर्भरता खत्म करती है।

इस संगोष्ठी में कुल आठ सत्र थे जिनमें कई विषयों पर चर्चा हुई जैसे - आत्म-निर्भरता को समझना; समसामयिक और भविष्य की चुनौतियां; विज्ञान और तकनीकी शिक्षा में अनुसंधान और आत्मनिर्भरता के साथ-साथ प्रमुख क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए मुद्दों और चुनौतियों पर क्षेत्रीय दृष्टिकोण; कृषि, उर्वरक और ग्रामीण औद्योगीकरण; अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका; व्यापार विनियमन और घरेलू विकास; वित्त औद्योगिक नीति, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीति; सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम और आत्मनिर्भरता, इत्यादि। संगोष्ठी में एक घोषणा पत्र पारित किया गया जिसमें श्रमिक संघों, जन संगठनों और नागरिक समाज के सुझाव शामिल किए गए।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यशाला

भोपाल में 4-7 नवंबर 2022 को चार दिवसीय राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न राज्यों के सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस कार्यशाला में आठ राज्यों के 25 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रतिभागियों ने मौजूदा वैचारिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा की और पहले दिन प्रतिरोध के नए आयाम और नए रास्तों पर चिंतन किया। दूसरे दिन राज्यों के सांस्कृतिक कार्य के अनुभव और सबक साझा किए गए। तीसरे दिन इंटरनेट के विस्फोट से उत्पन्न चुनौतियों पर चर्चा की गई और अंतिम दिन जन विज्ञान आंदोलन के द्वारा स्थायी और सतत सांस्कृतिक हस्तक्षेप की कार्य योजना तैयार की गई। इस कार्यशाला में प्रसिद्ध कवि और लेखक शुभा , प्रो. सव्यसाची चटर्जी, एस.आर आज़ाद , आशा मिश्र, नरेश प्रेरणा और कविता ने मुख्य भूमिका निभाई।

भोपाल

पीपल्स रिलीफ़ कमेटी (जन राहत समिति) के साथ स्वास्थ्य अधिकार कार्यशाला

पीपल्स रिलीफ़ कमेटी (PRC) के 80 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में, ईरान सोसाइटी कार्यालय में 25-27 नवंबर 2022 के बीच कोलकाता में PRC, पश्चिम बंग विज्ञान मंच (PBVM) और AIPSN हेल्थ डेस्क द्वारा संयुक्त रूप से स्वास्थ्य अधिकारों पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 28 संगठनों के प्रतिनिधियों और देश के विभिन्न हिस्सों से 25 से अधिक वक्ताओं और प्रशिक्षकों सहित सात राज्यों से 82 प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यशाला का उद्घाटन आशा मिश्र (महासचिव AIPSN), डॉ. दुलाल डोलुई (अध्यक्ष- PRC, पश्चिम बंगाल), डॉ. प्रद्योत सुर (संयुक्त सचिव, PRC, पश्चिम बंगाल) और प्रो. सत्यजीत चक्रवर्ती (कार्यकारी अध्यक्ष, पश्चिम बंग विज्ञान मंच) ने किया।

कार्यशाला का समापन प्रोफ़ेसर मोहन राव द्वारा दिए गए अमित सेनगुप्ता स्मृति व्याख्यान के साथ हुआ। व्याख्यान की सह-अध्यक्षता अमित सेनगुप्ता के पुत्र अरिजीत ने की।

कार्यशाला में स्वास्थ्य अधिकार, स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारक, स्वास्थ्य की राजनीतिक अर्थव्यवस्था, दवाओं तक पहुंच में बाधाएं और फ़ार्मा व्यापार, स्वास्थ्य सेवाओं का निजीकरण, स्वास्थ्य में स्ववित्तपोषण की चुनौतियां, बंगाल में स्वास्थ्य नीति की चुनौतियां और स्वास्थ्य में मीडिया की भूमिका जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई। इस कार्यशाला के माध्यम से देश के विभिन्न हिस्सों से प्रतिरोध और अमल की अलग-अलग आवाज़ों को भी एक साथ लाया जा सका। सभी भाग लेने वाले संगठनों ने सर्वसम्मति से संकल्प लिया कि पश्चिम बंगाल में स्थित सभी संगठन राज्य में जन विज्ञान अभियान (पीपल्स साइंस मूवमेंट/पीएसएम) और जन स्वास्थ्य अभियान (जेएसए) के काम को मिल कर मज़बूत करने का प्रयास करेंगे और स्वास्थ्य अधिकारों से संबंधित मुद्दों को उठाएंगे।

एक नए केरल के लिए विज्ञान

जन अभियान

पी. रमेश कुमार (प्रबंधक , पदयात्रा)

केरल शास्त्र साहित्य परिषद् (KSSP) ने अक्तूबर 2022 से 28 फ़रवरी 2023 के बीच **लोगों की भलाई के लिए विज्ञान और एक नए, बेहतर केरल के लिए विज्ञान** के विषय पर एक जन अभियान का आयोजन किया। इस अभियान ने वर्तमान परिदृश्य और केरल के सामाजिक जीवन की विशेषताएं; राष्ट्रीय और विश्वव्यापी राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों के कारण उभरते खतरे; हम कैसे इन खतरों का सामना कर सकते हैं; और विज्ञान का उपयोग कर कैसे एक बेहतर केरल के लिए उनका समाधान कर सकते हैं जैसे विषयों को संबोधित किया। सामाजिक जीवन की गुणवत्ता के प्रति खतरे : आत्महत्या के मामलों में वृद्धि की दर और इस में पारिवारिक विवादों की भूमिका; महिलाओं के साथ छेड़छाड़; दुर्घटनाओं में वृद्धि; नशीले पदार्थ और शराब का बढ़ता उपयोग; पर्यावरण के लिए खतरा; उच्च रुग्णता दर; राज्य का वित्तीय संकट; और समाज के हाशिए पर पड़े क्षेत्रों का निरंतर पिछड़ापन जैसे मुद्दे शामिल हैं।

KSSP ने शिक्षा, स्वास्थ्य, सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यटन, पर्यावरण, वैज्ञानिक स्वभाव, विकेंद्रीकरण, कृषि जैसे विभिन्न विषयों पर 18 संगोष्ठियों का राज्यव्यापी आयोजन किया तथा विभिन्न विकासात्मक मुद्दों पर 80 स्थानीय वैज्ञानिक अध्ययन शुरू किए, जिनमें से 30 अध्ययन पूरे हो चुके हैं और बाकी सुचारू रूप से चल रहे हैं। इस अभियान का मुख्य केंद्र 34 दिन की राज्यव्यापी पदयात्रा थी।

केरल पदयात्रा :

पदयात्रा का आरंभ गणतंत्र दिवस, 2023 को केरल के उत्तरी ज़िले कासरगोड से हुआ और केरल के 12 ज़िलों को छूते हुए राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर तिरुवनंतपुरम में समापन हुआ।

न्यायमूर्ति के. चंद्रू ने पदयात्रा का उद्घाटन किया और प्रतिष्ठित मीडियाकर्मी पी. साईनाथ समापन समारोह में मुख्य अतिथि थे। पदयात्रा के सभी 133 केन्द्रों पर स्थानीय आयोजन समितियों का गठन किया गया और इन समितियों ने यात्रा शुरू होने से पहले ही पुस्तकों और पर्चों के प्रचार-प्रसार का काम शुरू कर दिया। स्थानीय आयोजन समितियों द्वारा भोजन एवम् अन्य सुविधाओं की भी व्यवस्था की गई। कला जत्था पदयात्रा का एक अभिन्न अंग थे।

131 पूर्व नियोजित केंद्रों में लोगों ने पदयात्रा का स्वागत किया और कला जत्थे की मंडली ने इन केंद्रों में एक नाटक शी आर्काइव और विलकलमेल (कोट) प्रस्तुत किया; यह कार्यक्रम लैंगिक मुद्दों और वैज्ञानिक सोच पर आधारित था।

पदयात्रा के सदस्यों की संख्या प्रतिदिन 200 से 450 तक होती थी। इस कार्यक्रम में हज़ारों की संख्या में लोगों ने जत्थे को सलामी देकर, सदस्यों को पीने का पानी, फल और नाश्ता बांटकर हिस्सा लिया। जत्थे के सदस्य रात के समय 1000 से अधिक घरों में रुके और उनके साथ अभियान के विषय के बारे में बातचीत की।

जत्थे की मुख्य विशेषताओं में से एक यह थी कि इसका कोई स्थायी संयोजक नहीं था, और प्रतिदिन केरल के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक क्षेत्र के अलग-अलग नेताओं ने पदयात्रा का नेतृत्व किया। बी. रमेश (KSSP के राज्य अध्यक्ष) पदयात्रा के उपकप्तान थे। डॉ. टी. एम. थॉमस इसाक (पूर्वमंत्री), कडन्नापल्ली रामचंद्रन (विधायक), प्रोफ़ेसर सी. रवींद्रनाथ (पूर्व मंत्री), एन.के. प्रेमचंद्रन (सांसद), एम. स्वराज और के.के. शैलजा इन नेतृत्वकारी साथियों में कुछ राजनीतिक चेहरे थे। सीतल स्याम (ट्रांसजेंडर/ किन्नर समाज से कार्यकर्ता), डॉ. नीना प्रसाद (प्रख्यात नर्तक), डॉ. सुनील पीइलायीदम (लेखक और वक्ता), डॉ. मनोज सैमुअल (वैज्ञानिक) और कुरीपुझा श्रीकुमार (कवि) भी पदयात्रा का नेतृत्व करने वाले प्रतिष्ठित व्यक्तियों में शामिल थे। केरल के मंत्रियों, संसद सदस्यों, अन्य राजनीतिक नेताओं सहित सामाजिक-सांस्कृतिक हस्तियों ने विभिन्न भागों में जत्थे में भाग लिया। राज्य के दृश्य और प्रिंट मीडिया ने अभियान का बहुत अच्छे से प्रसार किया।

इस अभियान ने वर्तमान केरल के विवादास्पद परिदृश्य के बीच संवाद का माहौल बनाने की कोशिश की। इस अभियान ने आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए हमारे दैनिक जीवन में वैज्ञानिक सोच के महत्त्व को बताया। KSSP ने एक वैज्ञानिक और बेहतर केरल के पुनर्निर्माण के लिए समाज से एकजुट होने की अपील की।

अभियान का पूरा खर्च 1.71 करोड़ रुपये मूल्य की पुस्तकों और पुस्तिकाओं की बिक्री से उठाया गया। इस उद्देश्य के लिए 15 पुस्तिकाओं का एक सेट तैयार किया गया था और औसतन स्थानीय सामाजिक-राजनीतिक नेताओं ने जत्थे के नेता से पुस्तिकाओं का एक सेट ग्रहण करके पदयात्रा का स्वागत किया। इस प्रकार यह अनुभव भविष्य की अकादमिक चर्चाओं के लिए सब से महत्त्वपूर्ण घटकों में से एक बन गया। अब KSSP भविष्य की कार्ययोजनाओं की रूपरेखा बनाने के लिए इस व्यापक अभियान के संपूर्ण अनुभवों को समेकित कर रहा है।

പരിഷത്ത് പദയാത്ര തുടരുന്നു

കേന്ദ്രത്തിന് കടുത്ത മതത്താൽപ്പര്യം: ജസ്റ്റിസ് കെ ചന്ദ്രു

समता के तीस वर्ष

समता कार्यक्रम ने 8 मार्च 2023 को 30 साल पूरे किए। AIPSN ने पूरे भारत में इस शानदार यात्रा का जश्न मनाने का फ़ैसला किया। कार्यकारी समिति ने कार्यक्रम की योजना बनाने और देशभर में इसे क्रियान्वित करने के लिए एक समिति का गठन किया। समिति ने राज्यों के साथ बैठकें बुलाईं। घरेलू हिंसा, महिला सशक्तीकरण आदि विभिन्न मुद्दों पर कविता पाठ, सांस्कृतिक संध्या, गोष्ठी, संवाद जैसे कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस पहल के तहत राज्यों में 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया।

'जेनेटिक्स फ़ॉर पीपल' पर कार्यशाला

जन विज्ञान कार्यकर्ताओं के बीच आनुवंशिकी के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए छत्तीसगढ़ में 'जेनेटिक्स फ़ॉर पीपल' पर एक कार्यशाला का आयोजन हुआ। यह कार्यशाला 25-26 मार्च 2023 को पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ में आयोजित हुई। कार्यशाला में 15 राज्यों के प्रतिनिधि, AIPSN के राष्ट्रीय स्तर के 19 सदस्य संगठन, 5 विश्वविद्यालय और छत्तीसगढ़ के अलावा अलग-अलग राज्यों से 77 प्रतिभागी शामिल हुए। कार्यशाला का आयोजन AIPSN की सदस्य संस्था छत्तीसगढ़ विज्ञान सभा और पं. रविशंकर एस. यूनिवर्सिटी, छत्तीसगढ़ के सहयोग से विज्ञान प्रसार, डीएसटी, नई दिल्ली द्वारा किया गया। यह कार्यशाला मशहूर वैज्ञानिकों एच. जी. खुराना और जी. एन. रामचंद्रन के 100 साल पूरे होने और जी. जे. मेंडल के 200 साल पूरे होने के मौके पर आयोजित की गई।

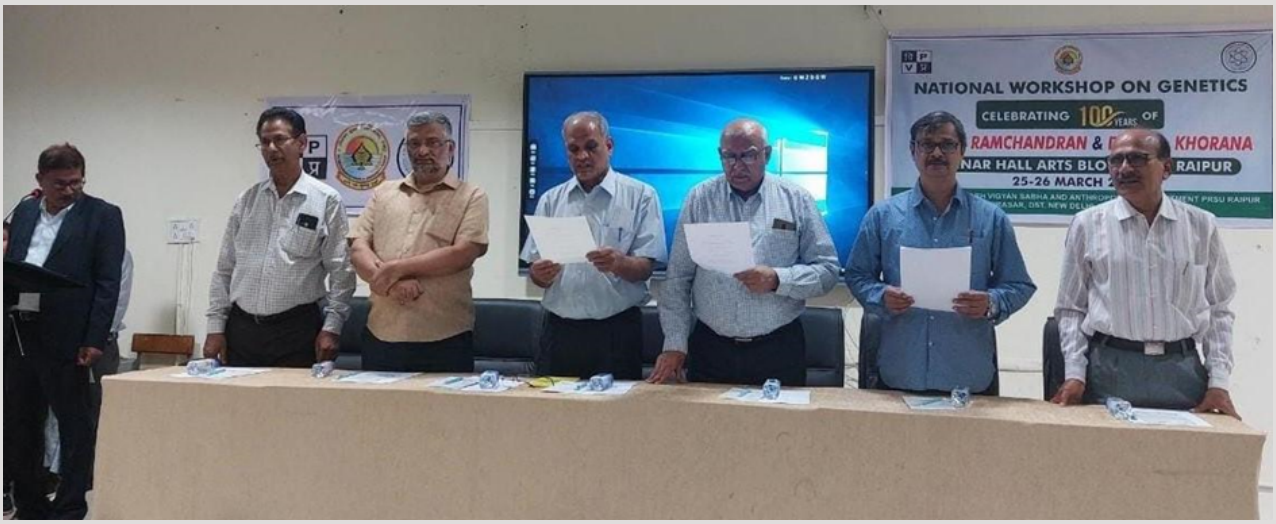

इस राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन आई. एफ़. एस. डॉ. के. सुब्रमण्यम (सदस्य, छत्तीसगढ़ राज्य योजना बोर्ड) द्वारा किया गया। अधिवेशन की अध्यक्षता माननीय कुलपति, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर और प्रो. किशोरी लाल वर्मा ने की। प्रो. एम. एल. नाइक, डॉ. टी. वी. वेंकटेश्वरन और डॉ. अरुणाभ मिश्रा, सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. असोल प्रधान ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। कलकत्ता विश्वविद्यालय, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, विज्ञान प्रसार, विद्यासागर कॉलेज, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय और पं. रविशंकर विश्वविद्यालय से आए वक्ताओं ने अपने विचार-विमर्श से इस कार्यशाला के सात सत्रों को समृद्ध बनाया।

डार्विन दिवस

12 फ़रवरी को डार्विन दिवस मनाया जाता है। AIPSN के आह्वान पर इस दिन विभिन्न राज्यों में डार्विन रैली औरबैठकें आयोजित की गईं। डार्विन दिवस से संबंधित चर्चा बिंदु और संसाधन प्रदान करने के लिए 10 फ़रवरी को एक राष्ट्रीय स्तर का वेबिनार आयोजित किया गया जिसमें AIPSN के अध्यक्ष प्रो. सत्यजीत रथ और उपाध्यक्ष प्रो. एस. कृष्णास्वामी प्रमुख वक्ता थे। विषय था : "वर्तमान विकासवादी विज्ञान और इसका महत्त्व"। सत्यजीत रथ ने हिंदी में और एस.कृष्णास्वामी ने अंग्रेज़ी में बात रखी। विवेक मोंटेरो ने सभापति की भूमिका निभाई।

17 फ़रवरी 2023 को देश में खगोल विज्ञान दिवस मनाया गया। AIPSN सदस्य संगठनों ने विभिन्न गतिविधियों के साथ यह दिन जियोर्दानो ब्रूनो के शहादत दिवस के रूप में मनाया। कुछ राज्यों ने 15 से 19 तारीख तक खगोल विज्ञान सप्ताह मनाया क्योंकि पहले दिन गैलीलियो का जन्मदिन मनाया जाता है और आखिरी दिन कोपरनिकस का। 15 फ़रवरी को "खगोल विज्ञान और मानव सभ्यता में इसके महत्त्व " विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित किया गया जसमें अनिकेत सुले और जाह्नवी बघेल ने बात रखी। रविंदर बनेयाल ने सभापति के रूप में भूमिका निभाई। वेबिनार में प्रश्नोत्तर सत्र रोचक रहा। पुणे कलेक्टिव ने डार्विन दिवस और खगोल विज्ञान दिवस दोनों को जोड़ते हुएएक संगोष्ठी का आयोजन किया। 28 फ़रवरी को हर जगह राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। अभी राज्यों से रिपोर्ट आनी बाकी है। पश्चिम बंगाल, हरियाणा, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र में विज्ञान दिवस मनाया गया जिसकी रिपोर्ट, प्रेस कवरेज और पर्चे भी भेजे गए हैं।

कृषि कार्यशाला

6 और 7 जनवरी 2023 को झारखंड के धनबाद में विस्तारित कृषि डेस्क की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक का आयोजन विभिन्न राज्यों और राष्ट्रीय स्तर पर चलाए जा रहे कार्यक्रमों और गतिविधियों पर चर्चा के लिए किया गया। राज्यों के प्रतिनिधियों ने कृषि में पानी/सिंचाई की कमी, बीज और उर्वरक की गुणवत्ता, खुली चराई, चावल की मोनोक्रॉपिंग और कृषि जैव विविधता के हो रहे नुकसान, फ़सल पर हमले, मिट्टी की उर्वरता में गिरावट, सरकारी समर्थन मूल्य न मिलने, बार-बार बाढ़ का सामना करने, मानसूनी बदलाव, देहात से मज़दूरों के पलायन जैसी कुछ प्रमुख चुनौतियों के बारे में बतलाया। उन्होंने अपने-अपने राज्यों में जन विज्ञान संगठनों द्वारा किए जा रहे कृषि हस्तक्षेपों को भी साझा किया।

दो दिवसीय बैठक में जलवायु परिवर्तन संकट के महे नज़र कृषि को टिकाऊ बनाने के मुख्य विषय के साथ वर्तमान समय में कृषि-पारिस्थितिक प्रथाओं के महत्त्व और किसानों, विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों को पर्याप्त पारिश्रमिक सुनिश्चित करने पर भी चर्चा की गई। बैठक के दौरान, किसान आयोग के विचार पर भी बात हुई और उन तरीकों पर भी चर्चा की गई जिनसे जन विज्ञान संगठन इस आयोग की गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं। बैठक में विभिन्न राज्यों और राष्ट्रीय स्तर पर कृषि डेस्क केसामूहिक हस्तक्षेप के लिए एककार्य योजना तैयार की गई।

बैठक की मेज़बानी BGVS, झारखंड ने की। बैठक में 15 राज्यों के 15 जन विज्ञान संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। विस्तारित बैठक में डेस्क सदस्यों के अलावा कृषि डेस्क के संयोजकों या संबंधित राज्यों द्वारा नामांकित प्रतिनिधियों ने भाग लिया। 6 जनवरी को संक्षिप्त उद्घाटन सत्र को आशा मिश्र (AIPSN महासचिव), सत्यजीत चक्रवर्ती (AIPSN के पूर्वी क्षेत्रीय संयोजक), काशीनाथ चटर्जी (महासचिव, BGVS), पार्थिब बसु (संयोजक, कृषि डेस्क) और दिनेश अबरोल (सदस्य, कृषि डेस्क) ने संबोधित किया।

समूह चर्चाओं से हस्तक्षेप के तीन विषय सामने आए। पहले क्षेत्रीय और फिर समूहों द्वारा चुने हुए विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। प्रतिभागियों ने कुछ ज्वलंत विषयों पर हस्तक्षेप की आवश्यकता चिह्नित की, जैसे –
1. पानी/सिंचाई; 2. बीज और विविधीकरण; और 3. खेत स्तरीय संसाधन एकीकरण।

प्रभात खबर (धनबाद) पृष्ठ-2, दिनांक 07/01/2023

अग्रसेन भवन में ज्ञान विज्ञान समिति की दो दिवसीय कृषि डेस्क की बैठक शुरू

किसानों को सशक्त बनाने पर जोर

उप मुख्य संवाददाता, धनबाद

ज्ञान विज्ञान समिति झारखंड की ओर से अखिल भारतीय ज्ञान विज्ञान नेटवर्क व भारत ज्ञान विज्ञान समिति की दो दिवसीय एग्रीकल्चर डेस्क की बैठक शुक्रवार से हीरापुर अग्रसेन भवन धर्मशाला में शुरू हुई. उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अखिल भारतीय जन विज्ञान नेटवर्क के पूर्व महासचिव प्रो डॉ दिनेश एब्रोल ने की. मुख्य अतिथि अखिल भारतीय जन विज्ञान नेटवर्क की राष्ट्रीय महासचिव आशा मिश्रा ने कहा कि हम लगातार कृषि नीतियों पर प्रमुखता से बातों को रखते है. किसानों को सशक्त बनाने के लिए रचनात्मक कार्य भी करते रहेंगे. मंचासीन अतिथियों में अखिल भारतीय जन विज्ञान नेटवर्क के प्रो. पार्थिव बासु, प्रो सत्यजीत चक्रवर्ती, असीम सरकार, भारत ज्ञान विज्ञान समिति के राष्ट्रीय महासचिव डॉ काशी नाथ चटर्जी थे. पूर्वी क्षेत्र के संयोजक प्रो सत्यजीत चक्रवर्ती कहा कि वह ओड़िशा, बंगाल, बिहार, झारखंड के कृषि क्षेत्र में व्यापक कार्य करेंगे. एग्रीकल्चर डेस्क के संयोजक प्रो पार्थिव बासु ने कहा कि वह कृषि में हस्तक्षेप के लिए एक ठोस योजना तैयार करेंगे इसके बाद देश में जन-समुदाय को जागरूक करेंगे.

बैठक में किसानों के हित में लिया जायेगा निर्णय : डॉ दिनेश एब्रोल ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भारत कृषि प्रधान देश है, लेकिन उन्नत कृषि के लिए कोई ठोस निर्णय नहीं हो पाता. इस कारण किसान दिनोंदिन गरीब होते जा रहें हैं. यही नहीं गांव से किसानों का पलायन रूक नहीं रहा है. इसीलिए हम रचना - संघर्ष करते आ रहे है, हमने लगातार नीतिगत मुद्दों पर हस्तक्षेप और संघर्ष किया है. कृषि में विकल्प देने की कोशिश की है. इस दो दिवसीय बैठक में इस पर गंभीर विषय पर चर्चा के बाद एक ठोस निर्णय निकल कर आने की संभावना है, जो किसानों के लिए लाभदायक होगा. धन्यवाद ज्ञापन असीम सरकार ने की. बैठक में झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़, केरल, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, हरियाणा, न्यू दिल्ली व उत्तर प्रदेश के वैज्ञानिक मौजूद थे.

बैठक को संबोधित करतीं आशा मिश्रा व मंचासीन अन्य अतिथि.

कार्यशाला में यह संकल्प लिया गया कि राज्य के प्रतिनिधि अपने डेस्क/संगठन के भीतर इन तीन चिह्नित मुद्दों पर हस्तक्षेप की संभावनाओं पर चर्चा करेंगे। इसके बाद राज्य जल्द से जल्द अपनी हस्तक्षेप योजना कृषि डेस्क को भेजेंगे।

यह भी निर्णय लिया गया कि प्रत्येक राज्य में कृषि और खाद्य प्रणाली की स्थिति पर एक पायलट जन सुनवाई का प्रयास किया जाएगा जिसमें सभी पक्षों का मत सुना जाएगा। साथ ही न्यूनतम समर्थन मूल्य और ऋण माफ़ी के अलावा अन्य मुद्दों पर नीतियों की समझ विकसित करने के लिए राज्यों को एक राज्यस्तरीय कार्य समूह बनाना होगा। काश्तकारी, साझा संसाधन, भूमि की उर्वरता में आई गिरावट, जल उपयोग, जैविक सामग्रियों की उपलब्धता, कृषि मज़दूर, महिला किसानों की मांग, फ़सल आधारित कृषि प्रणाली में पशुधन के एकीकरण में बाधाएं जैसे मुद्दों पर सर्वेक्षण किया जाएगा।

AIPSN स्थापना दिवस समारोह

AIPSN ने 11 फ़रवरी से 28 फरवरी तक स्थापना दिवस मनाया। इस मौक़े पर राष्ट्रीय स्तर का एक उद्घाटन वेबिनार 11 फ़रवरी को आयोजित किया गया। बाद में विभिन्न सदस्य संगठनों ने अपने राज्यों में इसी तरह के कार्यक्रम आयोजित किए।

पश्चिम बंगाल में विज्ञान अविजान-2023

(वैज्ञानिक सोच और विज्ञान शिक्षा पर एक अभियान)

सब का देश हमारा देश - आज़ादी के 75 साल, के नाम से पश्चिम बंग विज्ञान मंच ने जनवरी और फ़रवरी 2023 में एक विशाल अभियान का आयोजन किया। 'बिज्ञान-जुकतीबाद-मानबता' (विज्ञान, तर्कवाद और मानवतावाद) के नारों के साथ विज्ञान-अविजान का आयोजन किया गया। इस अभियान के दौरान पूरे राज्य में कुछ खास मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया – वैज्ञानिक स्वभाव, आत्मनिर्भरता, विज्ञान शिक्षा और NEP-2020। यह ज़िला स्तरीय योजना पर आधारित एक विकेन्द्रीकृत कार्यक्रम था जिसका उद्देश्य प्रत्येक ब्लॉक तक पहुंचने का था। इस उद्देश्य के लिए एक पुस्तिका प्रकाशित हुई, फोल्डर तैयार किया गया और नए नाटक, गीत और नृत्य तैयार किए गए।

विज्ञान अविजान - 2023 के दो घटक रहे -

1. अभियान जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम, रैली/साइकिल-रैली, बैठक/संगोष्ठी, विज्ञान और पोस्टर प्रदर्शनी, अंधविश्वास विरोधी शो, फ़िल्म शो आदि शामिल थे और जिसके माध्यम से 22 ज़िलों में 650 से अधिक स्थानों तक पहुंचा गया।
2. राज्य-भर में दस कार्यक्रमों द्वारा तीन स्तरों (ब्लॉक-ज़िला-राज्य स्तर) पर सांस्कृतिक प्रतियोगिता।

पश्चिम बंगाल में जन विज्ञान संगठनों के अलावा, कई समूह और संगठन, जैसे - छात्र, प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षक, कॉलेज और विश्वविद्यालय के शिक्षक और गैर-शिक्षण कर्मचारी भी NEP-2020 के खिलाफ़ कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। इसी के तहत एक साझा मंच - शिक्षा अधिकार मंच - भी बनाया गया है जिसमें सभी सम्बद्ध समूह और संगठन शामिल हुए हैं। शिक्षा अधिकार मंच के तहत कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं।

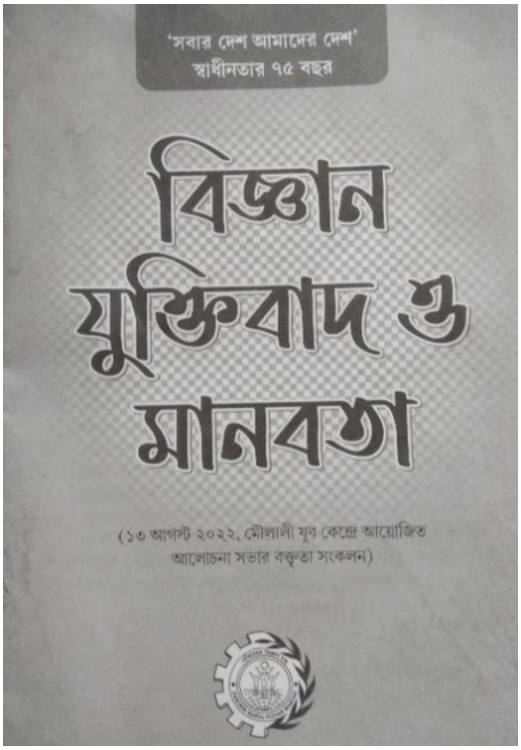

বিজ্ঞান অবিজান- 2023 पुस्तिका एवं फ़ोल्डर

विज्ञान अविजान- 2023: विभिन्न जिलों में कार्यक्रम

मध्य प्रदेश में नवनिर्वाचित पंचायती राज संस्थानों के सदस्यों से संवाद

मार्च 02, 2023 को भोपाल में पंचायती राज संस्थानों के नवनिर्वाचित सदस्यों का एक उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह नव निर्वाचित सदस्य ज़्यादातर जन विज्ञान अभियान के स्वयंसेवक हैं जो अपने इलाकों में सक्रिय हैं। AIPSN महासचिव आशा मिश्र ने पंचायती राज नेताओं को स्कूली शिक्षा की संभावनाओं और चुनौतियों के बारे में जानकारी दी। उन्हें स्कूली शिक्षा के संबंध में अपने दायित्वों के प्रति भी उन्मुख किया गया। इन सदस्यों को सरकारी स्कूलों को मज़बूत करने और स्कूल बंद होने से रोकने की आवश्यकता के बारे में भी जागरूक किया गया। चर्चा में ग्रामीण क्षेत्रों के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे भी शामिल थे।

मध्य प्रदेश में स्वास्थ्य देखभाल के अधिकार पर बैठक और संगोष्ठी

दिसम्बर 31, 2022 को भोपाल में मध्य प्रदेश की स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियों के बारे में चर्चा करने के लिए कई प्रमुख कार्यकर्ता एकजुट हुए। समूह ने राज्य में स्वास्थ्य अधिकार अभियान शुरू करने का संकल्प लिया। बैठक में दिल्ली से आए AIPSN हेल्थ डेस्क के संयोजक इंद्रनील और सदस्य ऋचा चिंतन ने भी भाग लिया। बाद में शाम को गांधी भवन, भोपाल में विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर श्याम भोरे ने की और शिल्पा ने समन्वय किया। सेमिनार को ऋचा और इंद्रनील ने संबोधित किया। संगोष्ठी में स्वास्थ्य अधिकारों की चुनौतियों पर चर्चा की गई।

SAVE EDUCATION - SAVE THE NATION

Kalajatha in Delhi :: 28 - 29 April 2023

:: 28th April 2023 ::

9:30 AM — Punjabi Bagh SSMI School — Ashok Rao

12 PM — Delhi University — Dinesh Abrol

06 PM — JNU Campus — D. Raghunandan, Prof. Anita Rampal

:: 29th April 2023 ::

05 PM — Dakshinpuri, Opposite Virat Cinema — Kavita Sharma

06 PM — Quami Ekta Bhavan, Near Gokulpuri metro — Rajeev Kunwar/Aman Saini

CAMPAIGN COMMITTEE, NEW DELHI

For Further Information, Please Contact

Richa Chintan - 09910887838 Kamla Menon - 9810010751

मौजूदा कार्यकारिणी के सदस्य

सत्यजीत रथ	अध्यक्ष
एस. कृष्णास्वामी	उपाध्यक्ष
कोमल श्रीवास्तव	उपाध्यक्ष
प्रज्वल शास्त्री	उपाध्यक्ष
आशा मिश्र	महासचिव
बिप्लब घोष	संयुक्त सचिव
प्रमोद गौरी	संयुक्त सचिव
राहुल शर्मा	संयुक्त सचिव
सत्यजीत चक्रवर्ती	संयुक्त सचिव
वी. जी. गोपीनाथन	संयुक्त सचिव
एस. आर. आजाद	कोषाध्यक्ष
अरुणाभ मिश्रा	ई सी सदस्य
अनूप कुमार सरकार	ई सी सदस्य
ब्लोरिन कुमार मोहंती	ई सी सदस्य
गीता महाशब्दे	ई सी सदस्य
नजबुद्दीन अहमद	ई सी सदस्य
तपन सरमा	ई सी सदस्य
ओ. पी. भुरैटा	ई सी सदस्य
नरेश प्रेरणा	ई सी सदस्य
इंद्रनील	ई सी सदस्य
असीम सरकार	ई सी सदस्य
जी. मुरलीधर	ई सी सदस्य
वरदप्रसाद	ई सी सदस्य
भीम सिंह ठाकुर	ई सी सदस्य
एन. मणि	ई सी सदस्य
एम. राधा	ई सी सदस्य
कमला मेनन	ई सी सदस्य
पुष्पा कुमारी	ई सी सदस्य
विजय भट्ट	ई सी सदस्य
अशोक एल. गैधानी	ई सी सदस्य
पार्थसारथी	ई सी सदस्य

विवेक मोंटेरो	विशेष आमंत्रित सदस्य
जोगिंदर वालिया	विशेष आमंत्रित सदस्य
वी. आर. रमन	विशेष आमंत्रित सदस्य
पार्थिब बसु	विशेष आमंत्रित सदस्य
एस. मोहना	विशेष आमंत्रित सदस्य
टी. सुंदर रमन	विशेष आमंत्रित सदस्य
मनोज निगम	विशेष आमंत्रित सदस्य
कविता कबीर	विशेष आमंत्रित सदस्य
अनीता रामपाल	विशेष आमंत्रित सदस्य
अशोक राव	विशेष आमंत्रित सदस्य
एन. प्रभा	विशेष आमंत्रित सदस्य
एम. पी. परमेश्वरन	पदेन सदस्य
डी. रघुनंदन	पदेन सदस्य
दिनेश अबरोल	पदेन सदस्य
श्रीदीप भट्टाचार्य	पदेन सदस्य
गौतम राय	पदेन सदस्य
टी. गंगाधरन	पदेन सदस्य
आर. एस. दहिया	पदेन सदस्य
सब्यसाची चटर्जी	पदेन सदस्य
पी. राजमणिक्कम्	पदेन सदस्य
सी. रामकृष्णन	पदेन सदस्य
काशीनाथ चटर्जी	पदेन सदस्य

सदस्य संगठन

असम साइंस सोसायटी, असम
भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (BGVS), बिहार
हिमाचल ज्ञान-विज्ञान समिति, हिमाचल प्रदेश
भारत ज्ञान-विज्ञान समुदाय, महाराष्ट्र
हरियाणा ज्ञान-विज्ञान समिति, हरियाणा
भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (BGVS), कर्नाटक
जन विज्ञान वेदिका (JVV), आंध्र प्रदेश
भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (BGVS), ओडिशा
भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (BGVS), पंजाब
भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (BGVS), राजस्थान
भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (BGVS), त्रिपुरा
भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (BGVS), उत्तर प्रदेश
भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (BGVS), उत्तराखंड
प्रौद्योगिकी और विकास केंद्र (सीटीडी), दिल्ली
दिल्ली विज्ञान मंच (डीएसएफ़), दिल्ली
एकलव्य, मध्य प्रदेश
फ़ेडरेशन ऑफ़ मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया (FMRAI)
वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और प्रौद्योगिकीविदों का फ़ोरम (FOSET)
ज्ञान-विज्ञान समिति, असम
भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (बीजीवीएस), झारखंड
नवनिर्मिति, महाराष्ट्र
जन विज्ञान वेदिका (जेवीवी), तेलंगाना
कर्नाटक राज्य विज्ञान परिषद् (केआरवीपी), कर्नाटक
केरल शास्त्र साहित्य परिषद् (केएसएसपी), केरल
भारत ज्ञान-विज्ञान समिति (बीजीवीएस), मध्य प्रदेश
मध्य प्रदेश विज्ञान सभा (एमपीवीएस), मध्य प्रदेश
पश्चिम बंग विज्ञान मंच (पीबीवीएम), बंगाल
पांडिचेरी विज्ञान मंच (पीएसएफ़), पांडिचेरी
समाज के लिए विज्ञान, झारखंड
प्रौद्योगिकी और विकास सोसायटी (एसटीडी), हिमाचल प्रदेश
तमिलनाडु विज्ञान मंच, तमिलनाडु
बंगीय साक्षरता प्रसार समिति, बंगाल
छत्तीसगढ़ विज्ञान सभा, छत्तीसगढ़
एलोरा विज्ञान मंच, असम
हरियाणा विज्ञान मंच, हरियाणा
हिमाचल विज्ञान मंच, हिमाचल प्रदेश
जन बिग्यान ओ प्रजुक्ति, ओडिशा
केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के अधिकारी संघों का राष्ट्रीय परिसंघ (एनसीओएसीपीएसयू)
जन संवाद समिति, उत्तराखंड
बिज्ञान मंच, त्रिपुरा

संपर्क करें:

AIPSN केंद्रीय सचिवालय,
ई-8/46, आकाशगंगा कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल - 462039
फ़ोन: 9425302012
वेबसाइट: https://aipsn.net
ईमेल: aipsnpeoplescience@gmail.com

पुरालेख से

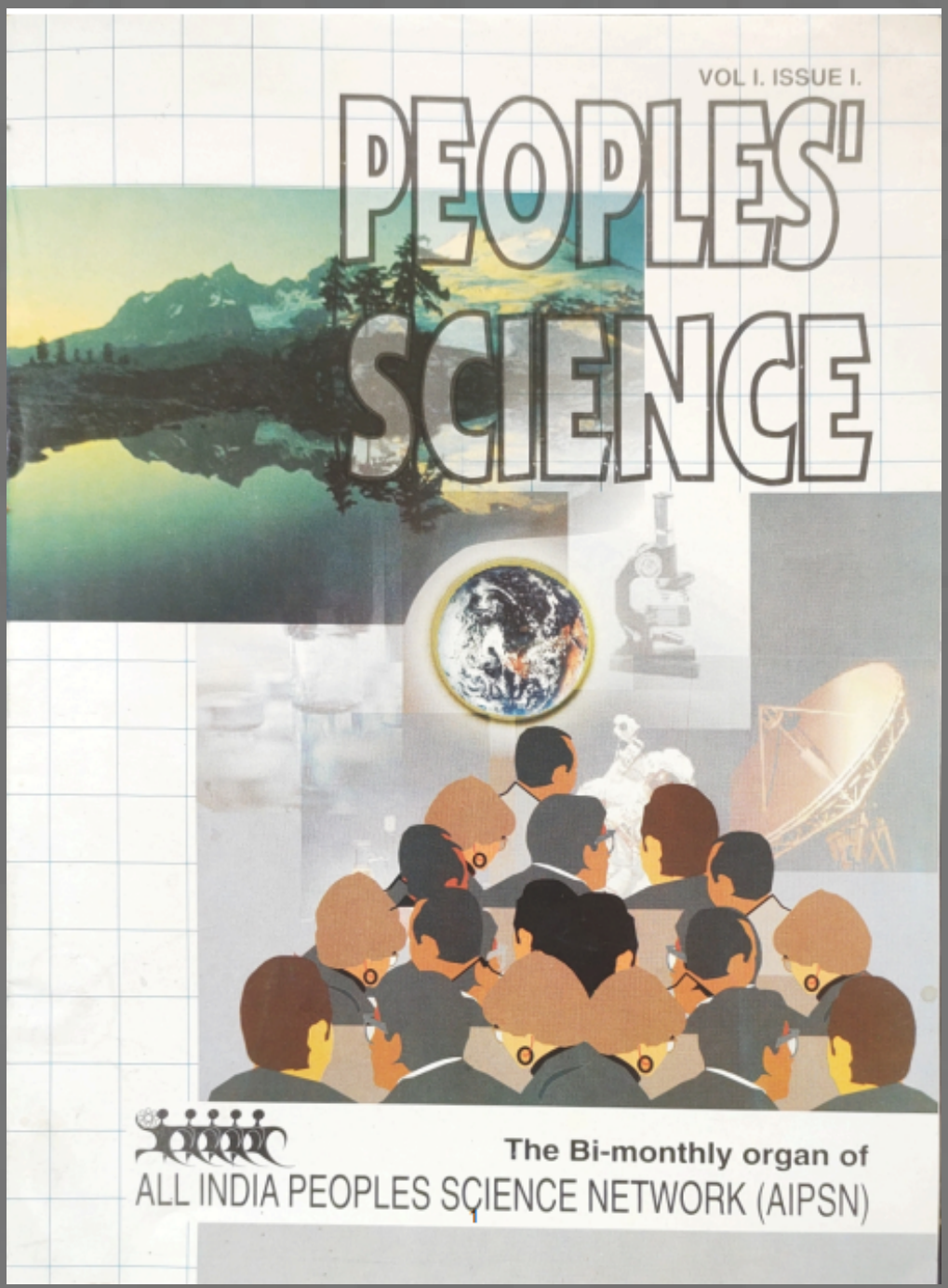

AIPSN न्यूज़लैटर का पहला पृष्ठ मार्च 1999 को प्रकाशित हुआ